



सम्राट अशोक के जन कल्याण का प्रासंगिता

Sachin Kumar Yadav

Research scholar, B.R.A.B.U. Muzaffarpur Bihar

Dr. Abhay Kumar

Principal RLSY College Bettiah

सम्राट अशोक ने अपने विशाल सम्राज्य के अन्दर और बाहरी दुनिया के देशों में जन-कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने जन-कल्याण के सदर्भ में जिन मूल्यों का प्रचार-प्रसार किया, उनमें मानवीय हित विशेषकर जीवों एवं मानव पर विशेष बल दिया। उन्होंने अहिंसा जैसी सवोभाव को अपने शासन में राज घोषणा के रूप में लागू कराया तथा उसे स्वयं पालन करने के जीवों की रक्षा, जन-कल्याण और धार्मिक सद्भाव को अधिक महत्व दिया। उन्होंने जूनागढ़ के शिलालेखों पर चौदह राज घोषणा उत्कीर्ण करवाई, जिनकी भाषा प्राकृत और लिपि ब्रह्मी थी। इन लेखों के चौदह राज घोषणाओं में सबसे अधिक प्रासंगिक था— जीव हत्या नहीं करना, जन-कल्याण हेतु औषधी उगाने तथा छायादार वृक्ष लगवाना, मानव धर्म की सवो, सभी सम्प्रदायों के प्रति सहनशीलता, विहार यात्रा के स्थान पर धर्मयात्रा करना एवं सभी मनुष्यों की उन्नति का कामना करना। प्रस्तुत शोध पत्र में सम्राट अशोक के मानव धर्म जो पूरे सम्राज्य के जन-कल्याण का आधार स्तम्भ बना, जो वर्तमान समय में प्रासंगिकता पर विचार करना है। अतः भारत एवं विश्व के देशों में अशोक के कार्य का प्रभाव आज के समय में कितना मूल्यवान हो सकता था, इसका भी विचार करना आवश्यक है। अशोक की मातृभूमि में आज उनके कार्यों का कितना प्रभाव है या आज की धार्मिक मतभेद, हिंसा, पर्यावरण संकट, शत्रुता और युद्ध जैसी समस्याओं के निदान हेतु अशोक की मानव धर्म नीति कितनी सफल हो पाती है। मुख्य शब्द : जन-कल्याण, मानव धर्म, अहिंसा, शिलालेख, विहार यात्रा, धर्म यात्रा, लिपि।

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास में सम्राट अशोक का चित्रण एक ऐसे शासक के रूप में स्मरण किया जाता है, जिसने न केवल एक विशाल सम्राज्य की स्थापना की, बल्कि शासन पद्धति को नैतिकता, करुणामय और धर्म आधारित मूल्यों पर स्थापित की। मौर्य सम्राज्य के इस महान शासक ने कलिंग युद्ध के बाद अपना हृदय को परिवर्तन करने का अनुभव महसूस किया और हिंसात्मक पहलुओं को त्याग कर धम्म नीति की ओर अग्रसर हुये। अशोक की धम्म नीति केवल एक धार्मिक विकल्प न

होकर एक सामाजिक-सांस्कृतिक दर्शन था, जिसका उद्देश्य जन-कल्याण सहिष्णुता, नैतिकता और मानवता धर्म की स्थापना करना था। ये सभी नीतियों का झलक उनके अभिलेखों, स्तम्भ लेखों, गुहा लेखों एवं शासकीय आदेशों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं, जो आज की भारतीय उप-महाद्वीप के विभिन्न हिस्सों में पाए जाते हैं।

सम्राट अशोक की धम्म नीति का ऐतिहासिक महत्व इस बात में निहित है कि उन्होंने अपनी शासन नीति को धर्मोपदेश का माध्यम बनाया और एक ऐसी नीति को जन्म दिया, जिसमें हिंसा, असहिष्णुता और दमन के स्थान पर शांति, प्रेम और सद्भाव ले लिया। उनका धम्म का उद्देश्य कोई विशेष धर्म या अन्य सम्प्रदाय का प्रचार नहीं, अपितु उनका व्यवहारिक नैतिकता, सभी प्राणियों के कल्याण, माता-पिता की सेवा एवं सभी धर्मों के प्रति सद्भावना था। उनकी यह नीति ने केवल तत्कालीन समाज के एक नैतिक दिशा प्रदान करती थी, बल्कि शासन को मानवीय दृष्टिकोण से देखने की एक नई दिशा प्रदान की। अशोक के अभिलेखों एवं स्तम्भों में वर्णित जन-कल्याण एवं धार्मिक सद्भावना की नीति को अवलोकन से ज्ञात होता है कि यह नीति समाज में नैतिक अनुशासन और आत्मसंयम को प्रोत्साहित करती थी। प्रमुख शिलालेखों में अशोक ने जीव हत्या का त्याग, पड़ोसी राज्यों के साथ जन-कल्याण, मानव धर्म की सेवा, सहनशीलता एवं प्रशासनिक नीतियों पर बल दिया। उनके इन सिद्धांतों के अनुसार एक सच्चा शासक वह है, जो प्रजा के कल्याण के लिए कार्य करे और दया, क्षमा तथा विनम्रता जैसे गुणों को अपनाये।

शोध उद्देश्य एवं प्रश्न

इस शोध पत्र का उद्देश्य अशोक का जन-कल्याण नीति का प्रासंगिकता का विश्लेषण करना, जो आज के कार्यों को कितना प्रभाव या धार्मिक मदभेद, हिंसा, पर्यावरण संकट, शत्रुता और युद्ध जैसे समस्याओं का निदान हेतु कितना सफल हो पाती।

शोध प्रविधि

इस शोध पत्र शोध की विधि खासकर ऐतिहासिक विश्लेषण, तुलनात्मक अध्ययन, अभिलेखों की समीक्षा एवं समकालीन सदंर्भों का मूल्यांकन को अपनाया गया है। इससे यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि क्या सम्राट अशोक के कार्य कितना प्रभाव या धार्मिक मतभेदों, हिंसा एवं पर्यावरणीय संकट केवल अतीत या आज वैश्विक परिदृश्य की उलझनों को सुलझाने का आधारशीला बन पाएगा।

- ❖ पीयूष शर्मा के अपने “अपने समकालीन विमर्श (2020)” लेख में अशोक की नीतियाँ आज भी सामाजिक समावेश पर्यावरणीय संरक्षण एवं धार्मिक सहिष्णुता के लिए प्रेरणा स्रोत हो सकती हैं, जो जन-कल्याण के पुनर्स्थापना की आवश्यकता पर बल देते हैं।
- ❖ रोमिला थापर ने “अशोक और मौर्य सम्राज्य का पतन” में अशोक के शासन नीति, व्यक्तित्व एवं धम्म नीति की गहनता से व्याख्या की।
- ❖ द वडर दैट राज इंडिया में ए0 एल0 वाशम ने मौर्य सम्राज्य की संस्कृतिक धम्म नीति एवं जन-कल्याण की नीति को अशोक ने स्थापित की, जो भारतीय इतिहास की नैतिक नियम का पहला कड़ी था।
- ❖ डी0 आर0 भंडारकर ने अभिलेखों के आधार पर अशोक की सभी नीतियों का चित्रण की है।
- ❖ हॉन्स फॉम ने “अशोक के लिपि” पुस्तक में शिलालेखों की भाषा लिपि के आधार पर अशोक की धार्मिक नीतियों का चित्रण किया।

सम्राट अशोक का परिचय मौर्य सम्राज्य भारतीय उप-महाद्वीप का पहला विशाल और सुसंगठित सम्राज्य था, जिसका स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य ने 322 ईसा पूर्व में कौटिल्य की सहायता से किया था। यह सम्राज्य अपने उत्कर्ष काल के दौरान सम्पूर्ण भारत अर्थात् पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बंगलादेश और कुछ अन्य देशों श्रीलंका आदि देशों तक फैला था। इस विशाल सम्राज्य का नेतृत्व चन्द्रगुप्त मौर्य, विन्दुसार एवं सम्राट प्रियादर्शी अशोक इसका प्रमुख नायक थे। सम्राट अशोक ने मौर्य सम्राज्य का तीसरा और सबसे प्रसिद्ध शासक रहा है। आरम्भ में सम्राट अशोक एवं पराक्रमी शासक के साथ-साथ एक कठोर हृदय रूपी शासक भी था। वह एक महान योद्धा एवं कुशल प्रशासक के साथ-साथ भारत के अन्दर उग्रगमि सम्राज्यवादी तथा कल्याणकारी नीति का पोषक था। सम्राज्य अशोक ने अहिंसा आधारित सवोभाव को अपने शासन में राज घोषणाओं के रूप में लागू करवाया, जिन्में जीवों की रक्षा, जन-कल्याण और धार्मिक सद्भाव प्रमुख रहे हैं। जूनागढ़ अभिलेख में अशोक के चौदह राज घोषणाएँ खुदी हुई हैं, जिनकी भाषा प्राकृति और लिपि ब्रह्मी है। इन घोषणाओं में सर्वाधिक प्रासंगिक प्रतीत होते हैं :-

1. जीव हत्या नहीं करना चाहिए।
2. अपने सम्राज्य तथा पड़ोसी राज्यों में अशोक ने जन-कल्याण हेतु औषधी उगाने, कुँए खुदवाने तथा मार्गों पर छायादार वृक्ष लगवाने का कार्य किया।
3. अशोक ने अपने वंशजों से भी मानव धर्म की सवो करने का अनुरोध किया।

4. सभी धार्मिक-सम्प्रदायों को परस्पर सहनशीलता, सयंम तथा भावशुद्धि रखनी चाहिए।
5. विहार-यात्रा के स्थान पर धर्म-यात्रायें करनी चाहिए, जिससे आम लोग मानव धर्म का अनुसरण करने के लिए प्रेरित हो।
6. सभी धार्मिक सम्प्रदायों का सम्मान करना चाहिए। एक-दूसरे के सम्प्रदाय की निन्दा छोड़कर सभी की उन्नति की कामना करनी चाहिए। सम्राट अशोक ने मानव धर्म को राजधर्म के रूप में जन-कल्याण का स्रोत

बनाया था। वर्तमान में इसका प्रासंगिकता को भारत एवं विश्व के देशों में एक मूल्यवान स्रोतों के रूप में शामिल कर रहे हैं।

हिंसा का परित्याग अहिंसा सम्राट अशोक की जन-कल्याण नीति का प्रधान केन्द्र था। कलिंग युद्ध का रक्तपात ने अशोक को यह बोध प्रदान करता है कि विश्व का कोई भी विजय नीति मानवीय जीवन की क्षति और पीड़ा से अधिक मूल्यवान नहीं हो सकती। तत्पश्चात् उन्होंने युद्ध नीति का परित्याग करके धम्म विजय को सर्वश्रेष्ठ माना। उन्होंने अपने अभिलेखों में स्पष्ट किया कि सच्चा विजेता वह है, जो जनमानस के हृदयस्थल में अपना निवास बना सके, न की तलवार के धार की बल से शासन को सफल बनाये। उन्होंने पशु हिंसा पर प्रतिबंध लगाया तथा जन-कल्याण को सर्वोपरि रखा, अस्पतालों, सड़कों, जल-स्रोतों, धर्मशालाओं और वृक्षारोपण जैसी योजना लागू की। अतः सम्राट अशोक का मानना था कि सभी प्राणी समान रूप से पीड़ा का अनुभव करते हैं और सभी के प्रति करुणा का भाव होना चाहिए।

सामाजिक समानता जातिवाद और वर्ण भेदभाव का विरोध अशोक की धम्म नीति सामाजिक समसता और समानता पर बल देती है। तत्कालीन समाज वर्ण-व्यवस्था से बंधा हुआ था, फिर भी अशोक ने अपने अभिलेखों में सभी वर्गों के लिए समान नैतिक शिक्षा प्रदान की। उन्होंने किसी जाति व्यवस्था को वरीयता नहीं दी, बल्कि सभी वर्गों की समुदाय की कल्याण की कामना की। धर्म महामात्रों की नियुक्ति समाज के सभी वर्गों तक नैतिक शिक्षाओं को पहुँच के लिए कार्य किया था, न की केवल उच्च वर्गों तक सीमित की। सम्राट अशोक ने दासों, स्त्रियों, वृद्धों और निर्धनों के कल्याण के लिए कई योजनाएँ बनाई, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उनकी दृष्टिकोण समावेशी और सामाजिक न्याय पर आधारित थी।

पर्यावरण संरक्षण

मानव, पशु-पक्षियों और वनस्पतियों की रक्षा अशोक का पर्यावरणीय दृष्टिकोण भी उनके जन-कल्याण का एक अभिन्न अंग था। उन्होंने न केवल जीव हत्या को हतोत्साहित किया, बल्कि पर्यावरणीय सतुलन को बनाये रखने हेतु वृक्षारोपण, जलाशयों की स्थापना और पशु चिकित्सा की सुविधाओं को बढ़ावा दिया तथा उन्होंने अपने अभिलेखों में उल्लेख करवाया। उन्होंने राजमार्गों की दोनों किनारे वृक्ष लगवाया, यात्रियों के लिए जलाशय बनवाया एवं अनेक चिकित्सा केन्द्रों की स्थापना करवाया, जहाँ मानव एवं पशुओं दोनों का ईलाज की जाती थी। यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण आधुनिक सोची थी, जो वर्तमान के पर्यावरणीय संकटों के समाधान में भी सहायक हो सकती है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित 17 सतत विकास लक्ष्य का उद्देश्य वैश्विक स्तर पर गरीबी हटाना, समानता बढ़ाना एवं पर्यावरण की रक्षा करना। ये लक्ष्य भी एक नैतिक दर्शाता है, जो आर्थिक विकास के साथ-साथ सामाजिक न्याय और पारिस्थितिक सतुलन को महत्व देता है। अशोक का जन-कल्याण नीति कई दृष्टिकोण से सतत विकास लक्ष्य के समानांतर दिखाई देता है। इस प्रकार से इनकी यह नीति एक नैतिक टिकाऊ और समावेशी समाज की कल्पना करती है।

वैश्विक शांति सम्राट अशोक की अहिंसा और विश्व शांति के लिए धम्म नीति की प्रेरणा आज वर्तमान विश्व के देशों में युद्ध, आतंक, आक्रमक राष्ट्रवाद और हथियारों की होड़ से जूझ रही है। अशोक की धम्म नीति अहिंसा पर आधारित थी, जो आज कई बुद्धिजीवीयों एवं संयुक्त राष्ट्र की वर्ल्ड पीस संकल्पनाओं में प्रतिध्वनित होती है। अशोक ने युद्ध नीति को “धम्म विजय” से प्रतिस्थापित किया था, जो एक क्रांतिकारी दृष्टिकोण था, जो तलवार के बल से नहीं बल्कि नैतिकता से हृदय जीतने की बात करते हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अहिंसा, करुणा और सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देने हेतु अशोक का दृष्टिकोण अत्यंत प्रेरणादायक हो सकता है। उनके विचारों को वैश्विक शांति शिक्षा, कूटनीति और शांति प्रयासों में शामिल किया जाना चाहिए। सम्राट अशोक की धम्म नीति यद्यपि प्राचीन भारत की देन है, परन्तु वह एक सर्वकालीक और सार्वभौमिक दर्शन प्रस्तुत करती है। सामाजिक समानता, पर्यावरण संरक्षण, धार्मिक सहिष्णुता, नैतिक शासन एवं वैश्विक शांति जैसे मुद्दों पर अशोक के सिद्धांत आज भी हमारे लिए पथ-प्रदर्शक बन सकते हैं। धम्म नीति हमें यह सिखाती है कि नैतिकता केवल निजी आचरण का विषय नहीं है बल्कि शासन, समाज-कल्याण और वैश्विक संबंधों की भी बुनियाद होनी चाहिए। अशोक का आदर्शवादी सिद्धांत यह दर्शाता है कि जब नेतृत्व नैतिक और करुणाशील हो, तभी सच्ची प्रगति और स्थाई शांति सम्भव हो सकती है।

अशोक का मूल्यांकन एवं अन्य प्राचीन शासकों की नीतियों से तुलना

सम्राट अशोक ने केवल भारतीय इतिहास के अपितु विश्व इतिहास के महानतम सम्राटों में से एक है। वह एक महान विजेता, कुशल प्रशासक एवं सफल धार्मिक नेता थे। चाहे जिस दृष्टि से भी उसकी उपलब्धियों का मूल्यांकन किया जाय, वह सर्वथा योग्य सिद्ध होते हैं। “उनमें चन्द्रगुप्त मौर्य जैसी शक्ति, समुद्रगुप्त जैसे बहुमुखी प्रतिभा तथा अकबर जैसी सहिष्णुता थी।” वह सबसे पहले “जीओ और जीने दो” तथा राजनीतिक हिंसा धर्म विरुद्ध हैं, का पाठ विश्व के शासन प्रणाली में स्थापित करने का प्रयास किया, जो आज एक प्रसांगिकता बना हुआ है। रोमन सम्राट ऑगस्टन और ट्रोजन जैसे शासकों ने विधि, प्रशासनिक सुधार और सम्राज्य विस्तार पर बल दिया, परन्तु नैतिकता को राजनीतिक उद्देश्य से जोड़ने का प्रयास सीमित था। यद्यपि रोमन कानूनों ने सामाजिक अनुशासन को बढ़ावा दिया, परन्तु उसमें करुणा और अहिंसा जैसी भावनाओं की प्रमुखता नहीं थी।

चीनी दर्शन को कन्फ्यूशियस की नीति भी कहा जाता है। कन्फ्यूशियस के विचार ‘ली’, ‘रेन’ और ‘झोग’ जैसे सिद्धांतों पर आधारित थे। वह भी शासन में नैतिकता की आवश्यकता पर बल देते थे। अशोक एवं कन्फ्यूशियस दोनों का उद्देश्य नैतिक व्यक्ति के निर्माण के माध्यम से आदर्श समाज की स्थापना करना था। चूँकि कन्फ्यूशियस की प्रणाली अधिक अनुशासन पर केन्द्रित थी, जबकि अशोक की नीति करुणा और आत्म परिवर्तन पर अधिक आधारित थी।

निष्कर्ष

सम्राट अशोक के जन-कल्याण नीति उनके धम्म दर्शन पर टिका हुआ था।

धम्म दर्शन एक ऐसा नैतिक और सामाजिक आस्था हैं जिसकी जड़ें भले ही प्राचीन भारत में हों, पर इसकी शाखाएँ आज के वैश्विक संदर्भ में भी प्रासंगिक रूप से फैली हुई हैं। अहिंसा, सत्य, करुणा, धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक समानता और पर्यावरण संरक्षण जैसे सिद्धांत आधुनिक समाज की जटिल समस्याओं के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। अशोक का धर्म दर्शन ने केवल एक व्यक्तिगत आचरण का मार्गदर्शक हैं बल्कि यह शासन, समाज और वैश्विक संबंधों के लिए भी एक नैतिक ढांचा प्रस्तुत करती है। आज के युग में जहाँ सामाजिक विषमता, धार्मिक असहिष्णुता, राजनीतिक भ्रष्टाचार और पर्यावरणीय संकट जैसे मुद्दे सामने हैं, वहाँ धम्म दर्शन इन सभी के लिए एक नैतिक मार्गदर्शन प्रदान करती है। नीति निर्माण में सामाजिक कल्याण और पर्यावरणीय सतुलन का प्राथमिकता, जिससे शासन अधिक उत्तरदायी और संवेदनशील बन सके। सामाजिक जागरूकता अभियान, जो नागरिकों को धम्म दर्शन के सिद्धांतों से जोड़े और

उन्हे व्यवहार में लाने हेतु प्रेरित करें। अंततः अशोक का जन-कल्याण नीति केवल विरासत नहीं हैं बल्कि भविष्य की दिशा भी है। यह एक ऐसा सार्वभौमिक कल्याण है, जो मानवता को नैतिकता सह-अस्तित्व एवं गतिशील समाज की ओर ले जाता है कि आज की दुनिया को फिर से धम्म दर्शन की आवश्यकताओं को महसूस दिलाता है कि एक

ऐसी दुनिया का निर्माण हो सके जो करुणा, सत्य और न्याय के पथ पर अग्रसर हो सके।

संदर्भ सूची

1. राय चौधरी हेमचन्द्र पृ० हि० ऑफ ऐन्शियट इंडिया, पृ०-345
2. थापर रोमिला (1917) अशोक और धम्म की अवधारणा, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, प्रेस नई दिल्ली।
3. बाशम, ए० एल० (1954) भारत की संस्कृतिक विरासत, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, प्रेस नई दिल्ली।
4. शास्त्री नीलकण्ठ के० ए० (1988) प्राचीन भारत का इतिहास, रंजन पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
5. यूएन डीपी (2023) सतत विकास लक्ष्य रिपोर्ट, संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम, नई दिल्ली।
6. चक्रवर्ती उमाशंकर (2011) अशोक धर्म और बौद्ध धर्म में अंतर, इंडियन हिस्टोरिकल रिव्यू खण्ड-38, अंक-2, पृ०-45-62
7. विश्व बैंक (2022) पर्यावरण और विकास भारत की स्थिति रिपोर्ट।
8. पांडेय, राजबली, प्राचीन भारत पृ-181
9. थापर रोमिला (1936) अशोक और मौर्य सम्राज्य का पतन, ग्रंथ शिल्पी इंडिया प्रा० लि०, लक्ष्मीनगर, दिल्ली।
10. कुमार, आलोक (2009) सम्राट अशोक एक पुनर्मूल्यांकन, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी।